पद २१९

(राग: कालंगडा - ताल: धुमाळी)

मज चैन नसे रे कदा। मोहिलें मन मुरली नादा।।ध्रु.।। टाकुनियां गृह पति मुलां। धुंडित्यें कुंजवनीं मी तुला। मुरली शब्द ऐकिला। असे वाटतें कीं कृष्णा मला। तुज संगें रतावें रे सदा।।१।। मुरलीचा

शब्द पडे कानीं। होते तळमळ अतिशय मनीं। शरीरांत काम

शिरोनीं। तापतो बह उग्रचि होऊनि। किती आवरूं मी या मदा ।।२।। काय वर्णूं मुरलीच्या सुखा । विसरल्यें देहतापादिक

दु:खा। बह नाटक रूप हा निका। मोहिलें मन पाहतां श्रीमुखा। तुजवरि मी झाल्ये फिदा।।३।। परब्रह्मीचें रूपडें। चारी धेनु संगें घेउन सवंगडे। सुदामा पेंद्या वांकडे। असे किती भक्तजन रोकडे। माणिक वर्णी हरिपदा।।४।।